## अलंकार द्वितीय वर्ष

तबला- पखावज

**पूर्णांक**:500, **न्यूनतम**:225

**क्रियात्मक**:300; (**मौरिवक**:200+**मंच प्रदर्शन**:100)

**न्यूनतम**:155

**शास्त्र**:200, **न्यूनतम**:70(35+35)

### प्रथम प्रश्न-पत्र

**पूर्णांक**:100, **न्यूनतम**:35

1) तबला/पखावज वादन कला के अध्यापन का ऐतिहासिक अध्ययन|
2) तबला/पखावज वादन कला के अध्यापन की विविध पद्धतियों का पारस्परिक तुलनात्मक अध्ययन|
3) उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय शास्त्रीय एवम् लोकसंगीत में प्रयुक्त होने वाले ताल वाद्यों की सचित्र जानकारी|
4) संगीत रत्नाकर के तालाध्याय का गहन अध्ययन तथा प्राचीन एवम् मध्ययुगीत ताल पद्धति की तुलना|
5) लय एवम् लयकारी का विस्तृत अध्ययन| निम्नलिखित तालों को पौनगुन, सवागुन, डेढगुन, तथा पौनेदोगुन में लिपिबद्ध करने का अभ्यास|

   त्रिताल, आडाचौताल, धमार, सवारी, जयताल, रूद्र
6) तबला/पखावज वादन की रचनाओं में शब्दालंकार, छंदवृत्त, गणवृत्त, और काव्य सौंदर्य की जानकारी|
7) निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखना:-
   अ) तबला तथा पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाली बंदिशों का निकास क्या वर्तमान ताल लिपि पद्धतियों द्वारा समझना संभव है? आपके विचार लिखिये|
   ब) समान मात्रा के विभिन्न तालों के औचित्य तथा उपयोगिता पर आपके विचार|
   क) भारतीय संगीत के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये क्या तबला/पखावज का शिक्षण आवश्यक होना चाहिये?
   ड) विभिन्न लयकारियों तथा लयों के अध्यापन की विभिन्न पद्धतियाँ|
   ई) क्या वैज्ञानिक उपकरण शास्त्रीय संगीत के शिक्षण में उपयोगी है?
   फ) तबला/पखावज वादकों के गुण दोषों का विवेचन|
   ग) तबला/पखावज के वादन में नजाकत और वजनदारी का महत्त्व
8) 'उपज' की परिभाषा तथा उसकी स्वतंत्र वादन तथा साथ संगति मे उपयोगिता तथा महत्त्व|

---

### द्वितीय प्रश्न पत्र

**पूर्णांक:100, न्यूनतम:35**

1) स्वतंत्र तबला/पखावज वादन में प्रयुक्त साहित्य भाषा एवं वादन प्रकारों के विशेषताओं की जानकारी|
2) साथ संगति कि शिक्षण पद्धति|

3) अवनद्ध वाद्यों का विकास और सौन्दर्यात्मक विविध नादनिर्मिति में उनकी बनावट का योगदान|

4) संगीत से रस निष्पत्ति तथा लय एवम् रस का संबंध|

5) विविध घरानेदार बंदिशों के रचनात्मक सौदर्य का सोदाहरण विवेचन|

6) स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर साथसंगत विधि का तुलनात्मक अध्ययन|

7) तबला/पखावज की बंदिशों की सोदाहरण व्याख्या|

8) निम्नलिखित वादक कलाकारों के जीवन परिचय एवम् योगदान की जानकारी|

उ.सिद्धार खाँ, उ.कल्लू खाँ, उ.मीरूखाँ, उ.बक्षूखाँ, उ.मोदूखाँ, उ.हाजी विलायत अली, पं.रामसहाय, पं.जानकी प्रसाद, पं.अंबादासपंत आगले, पं.दत्तोपंत मंगळवेढेकर, पं.मन्नुजी मृदंगाचार्य|